ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे **निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून**

वर्षः 27 अंकः 85 बुलेटिन अवधिः 27 – 31 अक्टूबर, 2018 दिनः शुक्रवार दिनाँकः 26 अक्टूबर, 2018

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **उधम सिंह नगर में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	**मौसम पूर्वानुमान – उधम सिंह नगर**				
	27/10/2018	**28/10/2018**	**29/10/2018**	**30/10/2018**	**31/10/2018**
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	30	29	29	29	30
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	12	11	11	10	10
बादल आच्छादन	मध्यम बादल	मध्यम बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	85	85	80	75	75
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	45	45	40	35	35
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	004	004	004	004	004
वायु की दिशा	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–उत्तर–पश्चिम	उत्तर–उत्तर–पश्चिम	दक्षिण–पूर्व

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (19 – 25 अक्टूबर, 2018 सुबह 8:30 तक) में आसमान साफ रहने के साथ कही–कही आंशिक बादल छाये रहे। अधिकतम तापमान 28.0 से 32.0 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 10.8 से 15.0 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 82 से 98 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 45 से 66 प्रतिशत एवं हवा 2.7 से 5.2 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पश्चिम–उत्तर–पश्चिम दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

- अक्टूबर माह के दूसरे पखवाड़े में चना, मसूर तथा मटर की बुवाई करें।
- चना की छोटे दाने वाली किस्मों– पंत जी–114, डी0सी0पी0 92–3, जी0एन0जी0–1581, आधार, जी0एन0जी0–1928, मध्यम आकार दाने वाली किस्मों– पंत जी–186, पंत चना–34, मोटे दाने वाली किस्म– पूसा–256 तथा काबुली चना की किस्म– पंत काबुली चना–1 में से एक का चुनाव करें। मसूर की उन्नतशील किस्मों– पंत एल0–406, पंत एल0–369, पंत एल0–4,5,7,8,9, डी0 पी0 एल–15, 62, गोल मटर की बौनी प्रजातियो– अपर्णा, मालवीय मटर–5, डी0पी0आर0–23, पंत मटर 13,14,25,74,155,157 एवं सामान्य किस्म– पंत मटर–42 में से चुनाव करें।
- मसूर की उन्नतशील किस्में–पी0एल0–406, पी0एल0–639, पी0एल0–4,5,7,8, डी0पी0एल0–15,62 आदि का चुनाव करें।
- दाल वाली गोल मटर की बौनी प्रजाति–अपर्णा, मालवीय मटर–15, डी0डी0आर0–23, पंत मटर 13,14,25,75 एवं सामान्य किस्म– पन्त मटर–42 का चुनाव करें।
- चना हेतु बीज दर 60–75 किग्रा/है0, बड़े दाने हेतु 75–100 किग्रा/है0 तथा मसूर हेतु 30–40 किग्रा/है0 रखे। मटर की बौनी व सामान्य प्रजातियो हेतु बीज दर क्रमशः 100–125 किग्रा/है0 व 75–80 किग्रा/है0 रखना चाहिए।
- मसूर व मटर की बुवाई 30 सेमी0 तथा चना की बुवाई 30–40 सेमी0 की दूरी पर करे।
- असिंचित अवस्था में गेहूँ की उन्नतशील किस्मे जैसे–सी 306, पी बी डब्लू 175, पी बी डब्लू 396, पी बी डब्लू 299, पी बी डब्लू 527 की बुवाई अक्टूबर के द्वितीय पखवाड़े में करे।
- बुवाई हेतु प्रमाणित बीज का प्रयोग करे। बिना प्रमाणित बीज को बोने से पहले कार्बेन्डाजिम 2.5 ग्राम या कार्बोक्सिम या टेबूकोनाजोल 2 डी एस 1.5 ग्राम को प्रति किग्रा बीज दर से प्रयोग करे।
- गेहूँ की बुवाई हेतु कतार से कतार की दूरी 22–23 सेमी एवं गहराई 5.0 सेमी रखे।
- बरसीम की बुवाई करे।
- बरसीम की उन्नत किस्म– यू0पी0बी0–110, मिस्कावी, पूसा जायन्ट, बरदान का चुनाव करें। तथा बीज दर 25–30 किलोग्राम/है0 रखे।

उद्यान प्रबन्धः

- खीरा वर्गीय फसलों में लौकी, तोरई, खीरा, करेला आदि के फल तोड़कर बाजार भेजें।
- मटर को तना मक्खी के प्रकोप से बचाने के लिए कार्बोफ्यूरॉन 3 सी0जी0, 25 कि0ग्रा0/है0 की दर से बुवाई के समय खाद व बीज के साथ जमीन में डालें।
- टमाटर में फल बेधक का प्रकोप होने पर, क्लोरान्ट्रानिलिप्रोले 18.5 एस0सी0, 150मि0ली0/है0 या इन्डोक्साकार्ज 14. 5 एस0सी0, 500 मि0ली0/है0 की दर से प्रयोग करें।
- यदि बैंगन का खेत बहुत ज्यादा नहीं है और तना बेधक कीट की समस्या है तो ग्रसित शाखा को ग्रसित भाग के एक इंच नीचे से तेज चाकू या ब्लेड से काटकर अलग कर दें। इसमें दवा डालने की आवश्यकता नहीं होती है और शाखाएं फिर से आ जाती है।
- टमाटर के लिए खेत की तैयारी करें तथा खेत की 2–3 बार जुताई करके समतल कर दें। टमाटर की फसल हेतु 120 कि0ग्रा0 नत्रजन, 80 कि0ग्रा0 फास्फोरस, 80 कि0ग्रा0 पोटाश उर्वरक की संस्तुति है।
- इस माह की दूसरे, तीसरे सप्ताह तक पछेती गोभी की रोपाई भी की जा सकती हैं। इसमें 150 कि0ग्रा0 नत्रजन, 80 कि0ग्रा0 फास्फोरस, 60 कि0ग्रा0 पोटाश उर्वरक की आवश्यकता है। जिसमें से आधी मात्रा नत्रजन व सम्पूर्ण फॉस्फोरस खेत की अंतिम जुताई के समय डालें व बची हुई नत्रजन को पौध रोपण के 30–35 दिन बाद व 60–65 दिन बाद करें। पौध रोपण की दूरी 60 से0मी0 कतार से कतार और 50 से0मी0 पौध से पौध रखें।
- टमाटर एवं मिर्च की फसल मे जड़ एवं तना संधि सड़न रोग के नियंत्रण हेतु ट्राईकोडरमा 10 ग्राम/लीटर या कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर जड़ो की सिंचाई करें।
- बागो की साफ सफाई तथा जुताई करें।
- वृक्ष में जाला होने की स्थिति में उसकी जाला यंत्र द्वारा सफाई करें तथा क्वीनौलफॉस 2 मि0ली0/लीटर के हिसाब से छिड़काव करें।

❖ गोंद निकलने की दशा में कॉपर–ऑक्सीक्लोराइड तथा बुझे हुए चूने का पौधे के मुख्य तने पर जहा से गोंद निकल रहा हो का लेप करें।

पशुपालन प्रबन्धः

❖ जिन पशुओं में एफ0एम0डी0 (मुखपका खुरपका) रोग के टीके नही लगें है उन पशुओं में तत्काल टीकाकरण करा लें। ताकि आपका पशुधन स्वस्थ रहे और उससे लगातार आपको सही उत्पादन प्राप्त होता रहें।

❖ प्रसव के तुरन्त बाद नवजात बच्चे की साफ–सफाई कर उसकी नाभी को धागे से बांधकर किसी साफ चाकू या ब्लेड से काटकर उस पर जैन्सन वायलेट पेन्ट अथवा टिंचर आयोडीन लगाना चाहिए।

❖ पशुओं के लिए हरे चारे में दलहनी चारा सर्वोत्तम आहार है जो पशुओं के जीवन यापन के साथ–साथ उत्पादन में भी सहायक होता है। अतः पशुपालकों से निवेदन है कि पशुओं को स्वस्थ रखने व अधिकाधिक उत्पादन प्राप्त करने हेतु सर्वोत्तम दलहनी चारा (बरसीम) अवश्य बोयें क्योंकि 5 कि0ग्रा0 बरसीम (हरा चारा), 1 किलो ग्राम सान्द्र आहार के बराबर होता है।

❖ इस महीने पशुओं खासकर भैंसों में प्रसव की दर बढ़ जाती है। अतः जो पशु ग्नामन है उनको अन्य पशुओ से अलग कर थोड़ी मात्रा में कई बार अतिरिक्त पूरक आहार दें अन्यथा उन्हें आफरा (पेट फूलना) की समस्या हो सकती है।

❖ प्रसव के 2 घंटे के भीतर नवजात की अच्छे से सफाई करने के उपरान्त उसको निश्चित रूप से थोड़ी मात्रा (1/2 – 1 कि0ग्रा0) खीस पिला दें।

❖ पशुओं को हरा चारा कम मात्रा में दें तथा हरे चारे में सूखा चारा मिलाकर दें।

❖ जिन पशुओं में एफ0एम0डी0 (मुखपका खुरपका) रोग के टीके नही लगें है उन पशुओं में तत्काल टीकाकरण करा लें। ताकि आपका पशुधन स्वस्थ रहे और उस से सही उत्पादन प्राप्त हो सके।

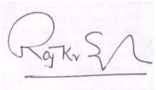

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर